B.A III, Psychology (H)

Paper V Social Psychology

Topic – Meaning and nature of public opinion

जनता का अंग्रेजी रूप "Public" लैटिन शब्द "Publicus" से बना है जिसका अर्थ होता है जनसमूह। समाज मनोवैज्ञानिकों ने ऐसे असंगठित एवं आकारहीन समूह जिसके व्यक्तियों की संख्या विभिन्न स्थानों पर फैली होती है एवं जिनमें आपसी व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं होता है परन्तु विचार एवं अभिरुचियाँ लगभग समान होती है

किम्बल यंग (Kimball Young, 1957) ने सामान्य अभिरुचि वाले व्यक्तियों के एक ढीले-ढाले रूप से गठित और संयुक्त समूह को जनता की संज्ञा दिया है

गिन्सबर्ग (Ginsberg, 1954) के अनुसार जनता ऐसा असंगठित और अनाकार व्यक्तियों का समूह है जिसके सदस्य समान इच्छाओं और मतों के आधार पर एक दूसरे से बंधे होते हैं परन्तु जिनकी संख्या इतनी बड़ी होती है कि वे एक दूसरे के साथ प्रत्यक्ष रूप से व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं बनाये रख सकते हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से जनता की कुछ विशेषताओं का विवरण किया जा सकता है

(1.) जनता व्यक्तियों का असंगठित एवं अनाकार समूह होता है जिसमें सदस्यों की संख्या काफी बड़ी एवं अनिश्चित होती है

Page 2

(2) संख्या अधिक होने पर समूह के प्रत्येक सदस्य आपस में प्रत्यक्ष रूप से व्यक्तिगत संबंध बनाये रखे।

(3) जनता के प्रत्येक सदस्य सामान्य अभिरुचि, इच्छा तथा मत के कारण रेडियो, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं आदि के द्वारा एक दूसरे से परोक्ष रूप से सम्बन्ध बनाये रखते हैं।

(4) चूंकि जनता एक असंगठित समूह होता है, इसलिए इसके सदस्यों का व्यवहार किसी मानक या नियम आदि द्वारा निर्धारित नहीं होता है।

इसी तरह मत किसी विषय के सम्बन्ध में सोच-समझकर व्यक्त किए गए विचार से होता है। मत की उत्पत्ति उस समय होती है जब भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की प्रतिक्रिया किसी विषय के प्रति भिन्न-भिन्न होती है। किम्बल यंग (Kimball Young, 1957) के अनुसार मत किसी विवादग्रस्त विषय से संबंधित होती है यदि विषय ऐसा है जिसपर कोई विवाद नहीं है उसे मत नहीं कहा जा सकता है परन्तु स्ट्रॉग (Strong) तथा कूले (Cooley) के अनुसार मत को केवल विवादग्रस्त तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। मत कभी-कभी महत्वपूर्ण विषयों या विचारों जो विवादग्रस्त नहीं होते हैं से संबंधित होता है परन्तु अधिकतर परिस्थितियों में मत के अन्तर्गत पारस्परिक विरोधी विचारों को ही अर्थात विवादग्रस्त विचारों को ही सम्मिलित किया जाता है। मत शब्द मनोवृत्ति के समान ही रखता है परन्तु सही अर्थों में मनोवृत्ति से भिन्न है।

मनोवृत्ति क्रिया करने की मानसिक झुकाव है जबकि मत मूलतः मौलिक एवं प्रतिक्रात्मक होता है इसी प्रकार मत मनोभाव (Sentiment) से भी मिलता जुलता है परन्तु मत इससे भिन्न होता है मनोभाव में संवेगात्मक झुकाव होता है जो मत में नहीं होता है मनोभाव का विषय विवादग्रस्त नहीं होता है जबकि मत का विषय विवादग्रस्त होता है।

उपर्युक्त मत एवं जनता के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जनमत जनता का मत है इसके लिए केवल बहुमत अपर्याप्त है जनमत किसी विशेष स्थान या समय में प्रभावपूर्ण विवादग्रस्त विचारधाराओं पर निर्मित एवं सार्वजनिक मत है जिसमें सार्वजनिक हित की बात सम्मिलित होती है।

जिन्सबर्ग (Ginsberg 1955) के अनुसार जनमत समुदाय में प्रचलित उन विचारों एवं निर्णयों का समूह होता है जो बहुत कुछ निश्चित रूप से प्रतिपादित होता है जिसमें कुछ स्थायित्व होता है।

किम्बल यंग (Kimball young, 1957) अनुसार जनमत वह मत है जिसे जनता किसी समय पर व्यक्त करती है।

उपर्युक्त विचारों के आधार पर जनमत के निम्नलिखित स्वरूप एवं अर्थ स्पष्ट हो जाता है

(1) जनमत व्यक्तिगत न होकर सार्वजनिक हित से संबंधित होता है

(2) यह जनता का न एक मत है ना बहुमत ही जो जनहित के विरुद्ध हो।

(3) जनमत केवल प्रभावशाली व्यक्ति के मत की उपज नहीं होती है

Page 4 :

जब समुदाय के अनेक व्यक्ति किसी विवादग्रस्त प्रश्न पर चिन्तन करते हैं तब इसकी उत्पत्ति होती है।

(4) जनमत कोई स्थिर विचार या धारणा नहीं है यह बदलता रहता है। व्यक्तियों की प्रेरणा, संवेग आदि में परिवर्तन होने से यह बदलता रहता है। प्रचार के माध्यम से इसमें परिवर्तन आता रहता है।

(5) जनमत जनता के सभी व्यक्तियों का मत नहीं होता है फिर भी इसमें प्रत्येक व्यक्ति को सक्रिय बनाने की शक्ति होती है।

(6) जनमत वाद-विवाद एवं विचार-विमर्श द्वारा पारस्परिक मत अनुकूलन के आधार पर बनता है। इस प्रकार जनमत किसी खास मत का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, बल्कि समान्या विशेष पर प्रचलित सभी मतों के आधार पर मान्य एवं सामान्य मत का प्रतिनिधित्व करता है।

(7) प्रत्येक जनमत का एक समाजिक एवं सांस्कृतिक आधार होता है जिनपर यह विकसित होता है।

(8) जनमत में जनता के बीच एक सामान्य अभिरुचि तथा इच्छा पायी जाती है जिसके कारण वे दूर होते हुए भी आपस में बँधे होते हैं।

Kumar Pateel
Maharaja College, Ara.